

# पाठ 55

1. फरीसी यीशु से नफरत क्यों करते थे?

-क्योंकि यीशु ने उन्हें बताया कि वह उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

2. और क्यों फरीसी यीशु से घृणा करते थे?

-क्योंकि यीशु ने उनसे कहा था कि वे पापी हैं, और यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा।

3. और क्यों फरीसी यीशु से घृणा करते थे?

-क्योंकि बहुत से लोग यीशु का अनुसरण करते थे, और फरीसी यीशु से ईर्ष्या करते थे।

4. यदि यीशु परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को तोड़ देता, तो फरीसी क्या करते?

-वे यीशु को मौत की सजा देंगे।

5. क्या यीशु परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को तोड़ देगा?

-नहीं।

6. यीशु कभी भी परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को क्यों नहीं तोड़ेंगे?

-क्योंकि यीशु परिपूर्ण है।

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यीशु पाप रहित है।

-क्योंकि यीशु ने हर चीज में पिता परमेश्वर की बात मानी।

6. यीशु ने फरीसियों की बात क्यों नहीं मानी?

-क्योंकि फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को बदल दिया था।

7. फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को कैसे बदला?

-उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं में अपने स्वयं के नियम जोड़े, परमेश्वर की आज्ञाओं को झूठा बना दिया।

8. यीशु फरीसियों से क्यों नाराज़ था?

-क्योंकि यीशु ने देखा कि उनके हृदय जिद्दी थे।

9. यीशु को कैसे पता चला कि उनके दिल जिद्दी थे?

-क्योंकि यीशु हर व्यक्ति के हर दिल में देख सकते हैं।

-क्योंकि यीशु हर व्यक्ति के हर दिल को जानता है।

10. जब यीशु ने सूखे हाथ से उस आदमी को चंगा किया, तो फरीसियों ने क्या किया?

-वे आराधनालय से बाहर गए और साजिश करने लगे कि वे यीशु को कैसे मार सकते हैं।

11. दुष्टात्माओं ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र क्यों कहा?

-क्योंकि वे जानते थे कि यीशु पिता परमेश्वर की ओर से आया है।

12. दुष्टात्माएँ क्यों नहीं चाहतीं कि आप यीशु पर विश्वास करें?

-क्योंकि राक्षस नहीं चाहते कि आप उनकी शक्ति से बच जाएं।

13. उसके पीछे चलने वाले लोगों में से, यीशु ने अपने विशेष शिष्य बनने के लिए कितने लोगों को चुना?

-बारह।

14. इन बारह आदमियों को क्या कहा जाता था?

-प्रेरित।

-जब यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को चुन लिया, तब उसने लोगों को शिक्षा देना जारी रखा।

आइए पढ़ें मरकुस 4:1

1-फिर से यीशु झील के किनारे उपदेश देने लगा। जो भीड़ उसके चारों ओर इकट्ठी हुई थी, वह इतनी बड़ी थी कि वह एक नाव पर चढ़ गया और उस पर झील पर बैठ गया, जबकि सभी लोग पानी के किनारे पर थे।

-भीड़ के कारण यीशु झील के किनारे नाव में बैठ गए।

-यीशु ने नाव से शिक्षा दी जबकि लोग झील के किनारे से सुनते थे।

आइए पढ़ें मरकुस 4:2

2-यीशु ने उन्हें दृष्टान्तों के द्वारा बहुत सी बातें सिखाईं

-यीशु ने लोगों को दृष्टान्तों द्वारा सिखाया।

-दृष्टान्त क्या है?

-एक दृष्टान्त एक कहानी है जो ईश्वर की सच्चाई सिखाती है।

-यीशु ने लोगों को दृष्टान्तों में क्यों पढ़ाना शुरू किया?

-भले ही कई लोगों ने यीशु का अनुसरण किया, लेकिन उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया।

-भले ही कई लोगों ने यीशु का अनुसरण किया, उन्होंने उसकी शिक्षा पर विश्वास नहीं किया।

-बहुत से लोग यीशु का अनुसरण केवल लोगों को चंगा करते देखने के लिए करते थे, लेकिन उन्होंने उसकी शिक्षा पर विश्वास नहीं किया।

-बहुत से लोगों ने यीशु को लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालते हुए देखने के लिए उसका अनुसरण किया, लेकिन उन्होंने उसकी शिक्षा पर विश्वास नहीं किया।

-क्योंकि बहुत से लोगों ने उसकी शिक्षा पर विश्वास नहीं किया, यीशु ने दृष्टान्तों के द्वारा लोगों को उपदेश देना शुरू किया।

-जब यीशु उपदेश दे रहा था, उसने लोगों को एक दृष्टान्त सिखाया।

-यीशु ने लोगों को बोनो वाले का दृष्टान्त सिखाया।

आइए पढ़ें मरकुस 4:2-12

2-और अपने उपदेश में यीशु ने कहा:

3-“सुनो! एक किसान अपना बीज बोने निकला।

4-जब वह बीज को तितर-बितर कर रहा था, तो कुछ मार्ग के किनारे गिरे, और पंछी आकर उसे खा गए।

5-कुछ चट्टानी जगहों पर गिरे, जहाँ ज्यादा मिट्टी नहीं थी। यह जल्दी उग आया, क्योंकि मिट्टी उथली थी।

6-परन्तु जब सूर्य निकला, तो पौधे झुलस गए, और जड़ न होने के कारण सूख गए।

7-और अन्य बीज कांटों के बीच गिरे, जो उग आए और पौधों को दबा दिया, ताकि उनमें अनाज न हो।

8-फिर भी अन्य बीज अच्छी भूमि पर गिरे। वह बड़ा हुआ, बड़ा हुआ और एक फ़सल पैदा की, जो तीस, साठ या सौ गुना बढ़ गई।”

9-तब यीशु ने कहा, “जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।”

10-जब यीशु अकेला था, बारह और उसके आस-पास के अन्य लोगों ने उससे दृष्टान्तों के बारे में पूछा।

11-उसने उनसे कहा, “परमेश्वर के राज्य का भेद तुम्हें दिया गया है। परन्तु बाहर वालों को दृष्टान्तों में सब कुछ कहा जाता है

12-ताकि, 'वे सदा देखते रहें, पर कभी न समझें, और कभी सुनते रहें, पर कभी न समझें; नहीं तो वे फिरें और क्षमा पाए जाएं!'"

-जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते थे, वे इस दृष्टान्त को नहीं समझेंगे।

-लेकिन उन लोगों के लिए जो यीशु में विश्वास करते थे, वे दृष्टान्त को समझेंगे और परमेश्वर के बारे में और जानेंगे।

-परमेश्वर आपको तभी सिखाएंगे जब आप सच्चाई जानना चाहते हैं।

-यदि आप सत्य नहीं जानना चाहते हैं, तो ईश्वर आपको नहीं सिखाएगा।

-जब यीशु के शिष्यों ने दृष्टान्त का अर्थ पूछा, तो यीशु ने यही कहा:

आइए पढ़ें मरकुस 4:13-14

13- तब यीशु ने उन से कहा, क्या तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते? तब तुम किसी दृष्टान्त को कैसे समझोगे?

14-किसान शब्द बोता है।"

-दृष्टान्त में, बीज क्या है?

-बीज परमेश्वर का वचन है।

-दृष्टान्त में, बोने वाला कौन है?

-बोनेवाला वह है जो परमेश्वर के वचनों को सिखाता है।

-येशु ने कहा कि जिस तरह बोने के लिए अलग-अलग मिट्टी होती है, उसी तरह अलग-अलग दिल होते हैं जिनमें परमेश्वर का वचन बोया जाता है।

-येशु ने कहा कि कुछ लोगों के दिल पथ की तरह होते हैं।

आइए पढ़ें मरकुस 4:15

15-येशु ने कहा, “कुछ लोग मार्ग के उस बीज के समान होते हैं, जहां वचन बोया जाता है। जैसे ही वे सुनते हैं, शैतान आता है और उस वचन को ले लेता है जो उनमें बोया गया था।”

-पथ की मिट्टी कैसी है?

-यह बहुत मुश्किल है।

-यह बहुत कठिन क्यों है?



-क्योंकि इस पर कई लोग चल रहे हैं।

-यदि किसान कठिन रास्ते पर बीज बोता है, तो क्या वह फल देगा?

-नहीं।

-कठिन रास्ते पर लगाया गया बीज फल क्यों नहीं देगा?

-क्योंकि रास्ता कठिन है, बीज मिट्टी में प्रवेश नहीं करेगा।

-फिर, पक्षी या अन्य जानवर आएंगे और बीज को ले जाएंगे ताकि वह विकसित न हो।

-यिशु ने कहा कि कुछ लोगों के दिल एक कठिन रास्ते की तरह होते हैं।

-कौन से लोग पथ की तरह होते हैं?

-इन लोगों का दिल कठोर होता है।

-परमेश्वर का वचन उनके दिलों में प्रवेश नहीं कर सकता।

-ये लोग परमेश्वर की बात नहीं सुनना चाहते।

-ये लोग नहीं चाहते कि परमेश्वर उन्हें सिखाए।

-ये लोग परमेश्वर का अनुसरण नहीं करना चाहते हैं।

-ये लोग केवल अपने पूर्वजों के बताए रास्ते पर चलना चाहते हैं।

-जब ये लोग परमेश्वर का वचन सुनते हैं, तो वे जल्द ही भूल जाते हैं

-परमेश्वर का वचन जो उन्होंने सुना है।

-फिर, शैतान आता है और परमेश्वर के वचन को उनसे दूर ले जाता है।

-क्या आपका दिल पथ की तरह है?

-यीशु ने यह भी कहा कि कुछ लोगों के दिल पथरीली मिट्टी की तरह होते हैं।

आइए पढ़ें मरकुस 4:16-17

16-यीशु ने कहा, "अन्य लोग, जैसे चट्टानी स्थानों पर बोए गए बीज, वचन को सुनते हैं और तुरन्त आनन्द से ग्रहण करते हैं।

17-लेकिन चूंकि उनकी कोई जड़ नहीं है, इसलिए वे थोड़े समय के लिए ही रहते हैं। जब संसार के कारण संकट या सताहट आती है, तो वे शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।”

-पथरीली मिट्टी की मिट्टी कैसी होती है?

-यह एक ऐसी मिट्टी है जो गहरी नहीं है।

-यह गहरा क्यों नहीं है?

-क्योंकि सतह के ठीक नीचे चट्टान है।

-यदि कोई किसान पथरीली मिट्टी में बीज बोएगा तो क्या वह फल देगा?

-नहीं।

-पथरीली मिट्टी में लगाया गया बीज फल क्यों नहीं देगा?

-क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं है, और जड़ें मिट्टी में गहराई तक नहीं जा सकतीं।

-यिशु ने कहा कि कुछ लोगों के दिल पथरीली मिट्टी की तरह होते हैं।

-कौन से लोग चट्टानी मिट्टी की तरह होते हैं?

-ऊपर से ये लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर को मानते हैं, लेकिन नीचे कोई आस्था नहीं है.

-ये लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन जब समस्याएं आती हैं, तो वे परमेश्वर की सच्चाई से दूर हो जाते हैं।

-ये लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन जब दूसरे उनका मजाक उड़ाते हैं, तो वे परमेश्वर की सच्चाइयों से मुंह मोड़ लेते हैं।

-ये लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन जब वे आत्माओं से डरते हैं, तो वे परमेश्वर की सच्चाई से दूर हो जाते हैं।

-क्या आपका दिल पथरीली मिट्टी जैसा है?

-येशु ने यह भी कहा कि कुछ लोगों के दिल कई कांटों वाली मिट्टी की तरह होते हैं।

आइए पढ़ें मरकुस 4:18-19

18-येशु ने कहा, और लोग, जो कांटों में बोए गए बीज के समान हैं, वचन सुनते हैं;

19-परन्तु इस जीवन की चिन्ता, धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं की अभिलाषाएं आकर वचन को दबा देती हैं, और वह निष्फल हो जाता है।”

-कई कांटों वाली मिट्टी कैसी है?

-यह एक ऐसी मिट्टी है जिसकी जुताई नहीं की गई है।

-किसान अगर कई कांटों वाली मिट्टी में बीज बोता है, तो क्या वह फल देगा?

-नहीं।

-कई कांटों वाली मिट्टी में बोया गया बीज फल क्यों नहीं देगा?

-क्योंकि कई कांटे पौधे को दबा देंगे।

-यिेशु ने कहा कि कुछ लोगों के दिल कई कांटों वाली मिट्टी की तरह होते हैं।

-कौन से लोग कई कांटों वाली मिट्टी के समान होते हैं?

-इन लोगों का कहना है कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन उनकी इच्छाएं उनके लिए परमेश्वर से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

-इन लोगों का कहना है कि वे परमेश्वर को मानते हैं, लेकिन उनके लिए परमेश्वर से ज्यादा पैसा होना जरूरी है।

-ये लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन एक बड़ा घर होना या कई मवेशियों का मालिक होना उनके लिए परमेश्वर से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

-क्या आपका दिल कई कांटों वाली मिट्टी की तरह है?

-यीशु ने यह भी कहा कि कुछ लोगों के दिल अच्छी मिट्टी की तरह होते हैं।

आइए पढ़ें मरकुस 4:20

20-यीशु ने कहा, “अन्य लोग, जैसे अच्छी भूमि में बोया गया बीज, वचन सुनते हैं, उसे ग्रहण करते हैं, और फसल पैदा करते हैं - तीस, साठ या सौ गुना जो बोया गया था।”

-अच्छी मिट्टी की मिट्टी कैसी होती है?

-यह एक ऐसी मिट्टी है जिसकी अच्छी जुताई की गई है।

-अगर कोई किसान अच्छी मिट्टी में बीज बोता है, तो क्या वह फल देगा?

-हां।

-क्यों?

-क्योंकि मिट्टी कठोर नहीं होती है।

-क्योंकि मिट्टी बहुत गहरी है।

-क्योंकि कांटे नहीं होते।

-क्योंकि मिट्टी की अच्छी तरह से जुताई की गई है।

-कौन से लोग अच्छी मिट्टी की तरह होते हैं?

-ये लोग परमेश्वर का वचन सुनते हैं, उस पर पूरा विश्वास करते हैं, और बहुत फल उत्पन्न करते हैं।

-ये लोग जानते हैं कि वे पाप में पैदा हुए हैं।

-ये लोग जानते हैं कि उनका पाप अनन्त मृत्यु के योग्य है।

-ये लोग जानते हैं कि केवल परमेश्वर ही उन्हें बचा सकते हैं।

-ये लोग यीशु को उद्धारकर्ता मानते हैं।

-ये लोग परमेश्वर के वचन में विश्वास करते हैं, और बहुत फल उत्पन्न करते हैं।

-क्या आपका दिल अच्छी मिट्टी जैसा है?